

मिथाइल एल्कोहल

सन्दर्भ

- उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में ज़हरीली शराब से हुई मौतों ने एक बार फिर इस सवाल को हमारे सामने रख दिया है कि आखिर 'कच्ची शराब' बनाने में वो क्या ग़लती है जिससे ये ज़हर बन जाती है।
 - जब से ये कारोबार है तब से इस तरह की मिलावट का सिलसिला जारी है कई बार देश के कई हिस्सों से ज़हरीली शराब के कारण मौत की खबरें आ चुकी हैं।
 - कच्ची शराब को अधिक नशीली बनाने के कारण ये ज़हरीली हो जाती है, सामान्यतः इसे गुड़, शीरा से तैयार किया जाता है.लेकिन इसमें यूरिया और बेसरमबेल की पत्तियां डाल दी जाती हैं ताकि इसका नशा तेज़ और टिकाऊ हो जाए।
-

मिथाइल एल्कोहल सम्बंधित बिंदु -

- शराब को अधिक नशीली बनाने के लिए इसमें ऑक्सिटोसिन मिला दिया जाता है, जो मौत का कारण बनती है।
- हाल के सालों में ऑक्सिटोसिन को लेकर ये जानकारी सामने आई है कि ऑक्सिटोसिन से नपुंसकता और नर्वस सिस्टम से जुड़ी कई तरह की भयंकर बीमारियां हो सकती हैं।
- इसके सेवन से आँखों में जलन, खारिश और पेट में जलन हो सकती है और लंबे समय में इससे आँखों की रोशनी भी जा सकती है।
- कच्ची शराब में यूरिया और ऑक्सिटोसिन जैसे केमिकल पदार्थ मिलाने की वजह से मिथाइल एल्कोहल बन जाता है जो लोगों की मौत का कारण बन जाता है।
- वैज्ञानिकों के अनुसार, मिथाइल शरीर में जाते ही केमिकल रिएक्शन तेज़ होता है. इससे शरीर के अंदरूनी अंग काम करना बंद कर देते हैं और तुरंत मौत हो जाती है।

मिलावट में असंतुलन

- जिस रासायनिक द्रव्य को देसी दारू कहकर बेचा जाता है, वो 95 फ़ीसदी तक विशुद्ध एल्कोहल है यानी बिना मिलावट के. इसे एथेनॉल भी कहते हैं.
- ये गन्ने के रस, ग्लूकोज़, शोरा, महुए का फूल, आलू, चावल, जौ, मकई जैसे किसी स्टार्च वाली चीज़ का फर्मेंटेशन (किण्वन विधि) करके तैयार किया जाता है।
- इस एथेनॉल को नशीला बनाने की लालच में कारोबारी इसमें मेथनॉल मिलाते हैं।
- और ये ज़हरीली तब हो जाती है जब इसके साथ 'काष्ठ अल्कोहल', 'काष्ठ नैफ्था' के नाम से मशहूर मेथेनॉल की मिलावट में संतुलन बिगड़ता है।

मेथेनॉल एल्कोहल क्या है?

- मेथेनॉल केमिस्ट्री की दुनिया का सबसे सरल एल्कोहल है. सामान्य ताप पर ये लिक्विड रूप में होता है।
- ये एक रंगहीन और ज्वलनशील द्रव है जिसकी गंध एथेनॉल (पीने के काम में आने वाला एल्कोहल) जैसी ही होती है।
- **उपयोग** इसका इस्तेमाल एंटीफ्रीज़र (फ्रीजिंग प्वायंट कम करने के लिए किसी कूलिंग सिस्टम में पानी के साथ मिलाया जाने वाला लिक्विड) के तौर पर, दूसरे पदार्थों का घोल तैयार करने के काम में और ईंधन के रूप में होता है।
- इंडस्ट्री एथेनॉल का काफ़ी इस्तेमाल करती है क्योंकि इसमें घुलने की ग़ज़ब की क्षमता होती है।
- इसका इस्तेमाल वॉर्निश, पॉलिश, दवाओं के घोल, ईथर, क्लोरोफ़ॉर्म, कृत्रिम रंग, पारदर्शक साबुन, इत्र और फल की सुगंधों और दूसरे केमिकल कम्पाउंड्स बनाने में होता है।
- पीने के लिए कई तरह की शराब, ज़ख्मों को धोने में बैक्टीरिया किलर के रूप में और प्रयोगशालाओं में सॉल्वेंट के रूप में ये काम में आता है।

मानव शरीर पर प्रतिक्रिया

- सामान्य शराब एथाइल एल्कोहल होती है जबकि ज़हरीली शराब मिथाइल एल्कोहल कहलाती है. कोई भी एल्कोहल शरीर में लीवर के ज़रिए एल्लिहाइड में बदल जाती है,लेकिन मिथाइल एल्कोहल फॉर्मैल्डाइड नामक के ज़हर में बदल जाता है।
- ये ज़हर सबसे ज़्यादा आंखों पर असर करती है. अंधापन इसका पहला लक्षण है. किसी ने बहुत ज़्यादा शराब पी ली है तो इससे फॉर्मिक एसिड नाम का ज़हरीला पदार्थ शरीर में बनने लगता है. ये दिमाग के काम करने की प्रक्रिया पर असर डालता है।
- मिथाइल एल्कोहल के ज़हर का इलाज इथाइल एल्कोहॉल है. ज़हरीली शराब के एंटीडोट के तौर पर टैबलेट्स भी मिलते हैं लेकिन भारत में इसकी उपलब्धता कम है।